

श्रीमद्भागवतम्

स्कन्ध 3



SGD

श्रीमद् भागवत पुराण

अध्याय 8

गर्भोदकशायी विष्णु से ब्रह्मा का
प्राकट्य

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

श्लोक 1: महा-मुनि मैत्रेय ने
विदुर से कहा : राजा पूरु का राजवंश
शुद्ध भक्तों की सेवा करने के लिए
योग्य है, क्योंकि उस वंश के सारे
उत्तराधिकारी भगवान् के प्रति
अनुरक्त हैं। तुम भी उसी कुल में
उत्पन्न हो और यह आश्चर्य की बात है
कि तुम्हारे प्रयास से भगवान् की

दिव्य लीलाएँ प्रतिक्षण नूतन से
नूतनतर होती जा रही हैं।

श्लोक 2: अब मैं भागवत पुराण
से प्रारम्भ करता हूँ जिसे भगवान् ने
प्रत्यक्ष रूप से महान् ऋषियों से उन
लोगों के लाभार्थ कहा था, जो
अत्यल्प आनन्द के लिए अत्यधिक
कष्ट में फँसे हुए हैं।

श्लोक 3: कुछ काल पूर्व तुम्हारी
ही तरह कुमार सन्तों में प्रमुख सनत्
कुमार ने अन्य महर्षियों के साथ
जिज्ञासावश ब्रह्माण्ड की तली में
स्थित भगवान् संकर्षण से भगवान्

वासुदेव विषयक सत्यों के बारे में पूछा था।

श्लोक 4: उस समय भगवान् संकर्षण अपने परमेश्वर का ध्यान कर रहे थे जिन्हें विद्वज्जन भगवान् वासुदेव के रूप में सम्मान देते हैं। किन्तु महान् पंडित मुनियों की उन्नति के लिए उन्होंने अपने कमलवत् नेत्रों को कुछ-कुछ खोला और बोलना शुरू किया।

श्लोक 5: चूँकि मुनिगण गंगानदी के माध्यम से उच्चतर लोकों से निम्नतर भाग में आये थे, फलस्वरूप

उनके सिर के बाल भीगे हुए थे।
उन्होंने भगवान् के उन चरणकमलों
का स्पर्श किया जिनकी पूजा नागराज
की कन्याओं द्वारा अच्छे पति की
कामना से विविध सामग्री द्वारा की
जाती है।

श्लोक 6: सनत् कुमार आदि
चारों कुमारों ने जो भगवान् की दिव्य
लीलाओं के विषय में सब कुछ जानते
थे, स्नेह तथा प्रेम से भरे चुने हुए
शब्दों से लय सहित भगवान् का
गुणगान किया। उस समय भगवान्
संकर्षण अपने हजारों फनों को उठाये

हुए अपने सिर की चमचमाती मणियों से तेज बिखेरने लगे।

श्लोक 7: इस तरह भगवान् संकर्षण ने उन महर्षि सनत्कुमार से श्रीमद्भागवत का भावार्थ कहा जिन्होंने पहले से वैराग्य का व्रत ले रखा था। सनत्कुमार ने भी अपनी पारी में सांख्यायन मुनि द्वारा पूछे जाने पर श्रीमद्भागवत को उसी रूप में बतलाया जिस रूप में उन्होंने संकर्षण से सुना था।

श्लोक 8: सांख्यायन मुनि अध्यात्मवादियों में प्रमुख थे और जब

वे श्रीमद्भागवत के शब्दों में भगवान् की महिमाओं का वर्णन कर रहे थे तो ऐसा हुआ कि मेरे गुरु पराशर तथा बृहस्पति दोनों ने उनको सुना।

श्लोक 9: जैसा कि पहले कहा जा चुका है महर्षि पराशर ने महर्षि पुलस्त्य के द्वारा कहे जाने पर मुझे अग्रगण्य पुराण (भागवत) सुनाया। हे पुत्र, जिस रूप में उसे मैंने सुना है उसी रूप में मैं तुम्हारे सम्मुख उसका वर्णन करूँगा, क्योंकि तुम सदा ही मेरे श्रद्धालु अनुयायी रहे हो।

श्लोक 10: उस समय जब तीनों जगत जल में निमग्न थे तो गर्भोदकशायी विष्णु महान् सर्प अनन्त की अपनी शय्या में अकेले लेटे थे। यद्यपि वे अपनी निजी अन्तरंगा शक्ति में सोये हुए लग रहे थे और बहिरंगा शक्ति के प्रभाव से मुक्त थे, किन्तु उनकी आँखें पूर्णतया बन्द नहीं थीं।

श्लोक 11: जिस तरह ईंधन के भीतर अग्नि की शक्ति छिपी रहती है उसी तरह भगवान् समस्त जीवों को उनके सूक्ष्म शरीरों में लीन करते हुए प्रलय के जल के भीतर पड़े रहे। वे

काल नामक स्वतः अर्जित शक्ति में लेटे हुए थे।

श्लोक 12: भगवान् अपनी अन्तरंगा शक्ति में चार हजार युगचक्रों तक लेटे रहे और अपनी बहिरंगा शक्ति से जल के भीतर सोते हुए प्रतीत होते रहे। जब सारे जीव कालशक्ति द्वारा प्रेरित होकर अपने सकाम कर्मों के आगे के विकास के लिए बाहर आ रहे थे तो उन्होंने अपने दिव्य शरीर को नीले रंग का देखा।

श्लोक 13: सृष्टि का सूक्ष्म विषय-तत्व, जिस पर भगवान् का

ध्यान टिका था, भौतिक रजोगुण द्वारा
विक्षुब्ध हुआ। इस तरह से सृष्टि का
सूक्ष्म रूप उनके उदर (नाभि) से
बाहर निकल आया।

श्लोक 14: जीवों के सकाम कर्म
के इस समग्र रूप ने भगवान् विष्णु के
शरीर से प्रस्फुटित होते हुए कमल की
कली का स्वरूप धारण कर लिया।
फिर उनकी परम इच्छा से इसने सूर्य
की तरह हर वस्तु को आलोकित
किया और प्रलय के अपार जल को
सुखा डाला।

श्लोक 15: उस ब्रह्माण्डमय कमल पुष्प के भीतर भगवान् विष्णु परमात्मा रूप में स्वयं प्रविष्ट हो गये और जब यह इस तरह भौतिक प्रकृति के समस्त गुणों से गर्भित हो गया तो साक्षात् वैदिक ज्ञान उत्पन्न हुआ जिसे हम स्वयंभुव (ब्रह्मा) कहते हैं।

श्लोक 16: कमल के फूल से उत्पन्न हुए ब्रह्मा जगत को नहीं देख सके यद्यपि वे कोश में स्थित थे। अतः उन्होंने सारे अन्तरिक्ष की परिक्रमा की और सभी दिशाओं में अपनी आँखें घुमाते समय उन्होंने चार

दिशाओं के रूप में चार सिर प्राप्त किये।

श्लोक 17: उस कमल पर स्थित ब्रह्मा न तो सृष्टि को, न कमल को, न ही अपने आपको भलीभाँति समझ सके। युग के अन्त में प्रलय वायु जल तथा कमल को बड़ी-बड़ी भँवरों में हिलाने लगी।

श्लोक 18: ब्रह्माजी ने अपनी अनभिज्ञता से विचार किया : इस कमल के ऊपर स्थित मैं कौन हूँ? यह (कमल) कहाँ से फूटकर निकला है? इसके नीचे कुछ अवश्य होना चाहिए

और जिससे यह कमल निकला है
उसे जल के भीतर होना चाहिए।

श्लोक 19: इस तरह विचार
करते हुए ब्रह्माजी कमल नाल के
रन्ध्रों (छिद्रों) से होकर जल के भीतर
प्रविष्ट हुए। किन्तु नाल में प्रविष्ट होकर
तथा विष्णु की नाभि के निकटतम
जाकर भी वे जड़ (मूल) का पता नहीं
लगा पाये।

श्लोक 20: हे विदुर, अपने
अस्तित्व के विषय में इस तरह खोज
करते हुए ब्रह्मा अपने चरमकाल में
पहुँच गये, जो विष्णु के हाथों में शाश्वत

चक्र है और जो जीव के मन में मृत्यु-
भय की भ्रान्ति भय उत्पन्न करता है।

श्लोक 21: तत्पश्चात् वाँछित
लक्ष्य प्राप्त करने में असमर्थ होकर वे
ऐसी खोज से विमुख हो गये और पुनः
कमल के ऊपर आ गये। इस तरह
इन्द्रियविषयों को नियंत्रित करते हुए
उन्होंने अपना मन परमेश्वर पर एकाग्र
किया।

श्लोक 22: अपने सौ वर्षों के
बाद जब ब्रह्मा का ध्यान पूरा हुआ तो
उन्होंने वाँछित ज्ञान विकसित किया
जिसके फलस्वरूप वे अपने ही भीतर

अपने हृदय में परम पुरुष को देख
सके जिन्हें वे इसके पूर्व महानतम्
प्रयास करने पर भी नहीं देख सके थे।

श्लोक 23: ब्रह्मा यह देख सके
कि जल में शेषनाग का शरीर विशाल
कमल जैसी श्वेत शय्या था जिस पर
भगवान् अकेले लेटे थे। सारा
वायुमण्डल शेषनाग के फन को
विभूषित करने वाले रत्नों की किरणों
से प्रदीप्त था और इस प्रकाश से उस
क्षेत्र का समस्त अंधकार मिट गया
था।

श्लोक 24: भगवान् के दिव्य शरीर की कान्ति मूँगे के पर्वत की शोभा का उपहास कर रही थी। मूँगे का पर्वत संध्याकालीन आकाश द्वारा सुन्दर ढंग से वस्त्राभूषित होता है, किन्तु भगवान् का पीतवस्त्र उसकी शोभा का उपहास कर रहा था। इस पर्वत की चोटी पर स्वर्ण है, किन्तु रत्नजटित भगवान् का मुकुट इसकी हँसी उड़ा रहा था। पर्वत के झरने, जड़ी-बूटियाँ आदि फूलों के दृश्य के साथ मालाओं जैसे लगते हैं, किन्तु भगवान् का विराट शरीर तथा उनके हाथ-पाँव रत्नों, मोतियों, तुलसीदल

तथा फूलमालाओं से अलंकृत होकर
उस पर्वत के दृश्य का उपहास कर
रहे थे।

श्लोक 25: उनके दिव्य शरीर
की लम्बाई तथा चौड़ाई असीम थी
और वह तीनों लोकों—उच्च, मध्य
तथा निम्न—लोकों में फैली हुई थी।
उनका शरीर अद्वितीय वेश तथा
विविधता से स्वतःप्रकाशित था और
भलीभाँति अलंकृत था।

श्लोक 26: भगवान् ने अपने
चरणकमलों को उठाकर दिखलाया।
उनके चरणकमल समस्त भौतिक

कल्मष से रहित भक्ति-मय सेवा द्वारा प्राप्त होने वाले समस्त वरों के स्रोत हैं। ऐसे वर उन लोगों के लिए होते हैं, जो उनकी पूजा शुद्ध भक्तिभाव में करते हैं। उनके पाँव तथा हाथ के चन्द्रमा सदृश नाखूनों से निकलने वाली दिव्य किरणों की प्रभा (छटा) फूल की पंखुडियों जैसी प्रतीत हो रही थी।

श्लोक 27: उन्होंने भक्तों की सेवा भी स्वीकार की और अपनी सुन्दर हँसी से उनका कष्ट मिटा दिया। कुंडलों से सज्जित उनके मुख

का प्रतिबिम्ब अत्यन्त मनोहारी था, क्योंकि यह उनके होठों की किरणों तथा उनकी नाक एवं भौंहों की सुन्दरता से जगमगा रहा था।

श्लोक 28: हे विदुर, भगवान् की कमर पीले वस्त्र से ढकी थी जो कदम्ब फूल के केसरिया धूल जैसा प्रतीत हो रहा था और इसको अतीव सज्जित करधनी घेरे हुए थी। उनकी छाती श्रीवत्स चिन्ह से तथा असीम मूल्य वाले हार से शोभित थी।

श्लोक 29: जिस तरह चन्दन वृक्ष सुगन्धित फूलों तथा शाखाओं से

सुशोभित रहता है उसी तरह भगवान् का शरीर मूल्यवान मणियों तथा मोतियों से अलंकृत था। वे आत्मस्थित (अव्यक्त मूल) वृक्ष और विश्व के अन्य सभी के स्वामी थे। जिस तरह चन्दन वृक्ष अनेक सर्पों से आच्छादित रहता है उसी तरह भगवान् का शरीर भी अनन्त के फनों से ढका था।

श्लोक 30: विशाल पर्वत की भाँति भगवान् समस्त जड़ तथा चेतन जीवों के लिए आवास की तरह खड़े हैं। वे सर्पों के मित्र हैं, क्योंकि अनन्त देव उनके मित्र हैं। जिस तरह पर्वत में

हजारों सुनहरी चोटियाँ होती हैं उसी तरह अनन्त नाग के सुनहरे मुकुटों वाले हजारों फनों से युक्त भगवान् दीख रहे थे। जिस तरह पर्वत कभी-कभी रत्नों से पूरित रहता है उसी तरह उनका शरीर मूल्यवान रत्नों से पूर्णतया सुशोभित था। जिस तरह कभी-कभी पर्वत समुद्र जल में डूबा रहता है उसी तरह भगवान् कभी-कभी प्रलय-जल में डूबे रहते हैं।

श्लोक 31: इस तरह पर्वताकार भगवान् पर दृष्टि डालते हुए ब्रह्मा ने यह निष्कर्ष निकाला कि वे भगवान्

हरि ही हैं। उन्होंने देखा कि उनके वक्षस्थल पर पड़ी फूलों की माला वैदिक ज्ञान के मधुर गीतों से उनका महिमागान कर रही थी और अतीव सुन्दर लग रही थी। वे युद्ध के लिए सुदर्शन चक्र द्वारा सुरक्षित थे और सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि इत्यादि तक उनके पास फटक नहीं सकते थे।

श्लोक 32: जब ब्रह्माण्ड के भाग्य विधाता ब्रह्मा ने भगवान् को इस प्रकार देखा तो उसी समय उन्होंने सृष्टि पर नजर दौड़ाई। ब्रह्मा ने विष्णु की नाभि में झील (नाभि सरोवर)

तथा कमल देखा और उसी के साथ प्रलयकारी जल, सुखाने वाली वायु तथा आकाश को भी देखा। सब कुछ उन्हें दृष्टिगोचर हो गया।

श्लोक 33: इस तरह रजोगुण से प्रेरित ब्रह्मा सृजन करने के लिए उन्मुख हुए और भगवान् द्वारा सुझाये गये सृष्टि के पाँच कारणों को देखकर वे सृजनशील मनोवृत्ति के मार्ग पर सादर स्तुति करने लगे।

* * * * *

श्रीलगुरुदेव